[Social Issues and Environmental Problems,Vol.3 (Iss.9:SE): Sep, 2015] ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)
Impact Factor: 2.035 (I2OR)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i9SE.2015.3268

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

स्वच्छताः भारत की चुनौती

प्रज्ञा पाण्डेय, गरिमा यादव
रिसर्च स्कॉलर, समाज कार्य विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

प्रस्तावना

किसी भी देश की उन्नति का आधार स्वच्छता व स्वास्थ्य है। स्वच्छ पर्यावरण ही किसी भी समुदाय की स्वास्थ्य स्थिति को ऊंचा उठाने में सहायक है। स्वच्छ पर्यावरण समुदाय के लोगों के जीवन स्तर को सुधारने में सहायक हो सकता है। साथ ही वह समुदाय में रोगों के चक्र को तोड़ने में भी सक्षम है। सरकार व आम जनता के प्रयास व सहभागिता द्वारा विभिन्न संसाधनों का प्रयोग किया जा रहा है और बेहतर परिणाम हेतु प्रयासरत हैं। इसके द्वारा समुदाय का सामाजिक–आर्थिक विकास, स्वच्छ पर्यावरण हेतु संबंधित सांस्कृतिक कारक, समुदाय की क्षमता, व्यवहार, कानून आदि का उपयोग बेहतर तरीके से हो रहा है।

भारत देश सम्पूर्ण में स्वच्छ पर्यावरण के स्तर में बहुत ही पीछे है। अस्वच्छता ने आज भी भारत को अपने घेरे में जकड़ लिया है, जिसमें से बाहर निकलने के लिए भारत को स्वच्छता व स्वास्थ्य के मुद्दें पर एकजुट होकर काम करने व विभिन्न रणनीतियों व कार्यक्रमों को क्रियान्वित करने की आवश्यकता है, जिससे लक्ष्यों को जमीनी स्तर पर सफलतापूर्वक प्राप्त किया जा सके। अस्वच्छता के कुचक्र से बाहर निकलने के लिए केन्द्र व राज्य स्तर पर विभिन्न प्रकार की रणनीतियां बनायी जा रही है। स्वच्छ पर्यावरण ही समुदाय को विभिन्न रोगों के चक्र को तोड़ने में सक्षम है।

वर्तमान स्थिति

भारत में स्वच्छ पेय जल, प्रदूषण से संबंधित स्वास्थ्य समस्याएं, बढ़ती जनसंख्या, जल संसाधनों का असमान वितरण, प्रशासन संबंधित समस्याएं, शहरीकरण तथा औद्योगीकरण, प्रवसन आदि अनेक समस्याएं है जो पर्यावरण में अस्वच्छता तथा स्वास्थ्य की समस्या को लगातार बढ़ा रही है।

वर्तमान आंकड़ों के अनुसार भारत का सकल घरेलू उत्पाद की दर 7.5–8.0 प्रतिशत है। भारत बजट का 1.2 प्रतिशत राशि स्वास्थ्य एवं स्वच्छता पर करता है। इस संदर्भ में तरह से देखा जाए तो मंगल मिशन में लगे धन का 40 गुना व्यय अब तक स्वच्छता व स्वास्थ्य पर हुआ है। इतनी धनराशि का व्यय होने के बाद भी यहां पर स्थिति अति गंभीर बनी हुयी है। 760 मिलियन लोगों को स्वच्छ पेय जल उपलब्ध नहीं हो पा रहा है। देश के 774 मिलियन लोग स्वच्छता सेवा से वंचित है। केवल 14 प्रतिशत जनता ही शौचालय की सुविधा का लाभ उठा रही है। देश में अस्वच्छता व असुरक्षित पेय जल से प्रति वर्ष 1,40,000 बच्चे डायरिया के कारण मृत्यु को प्राप्त हो रहे है। भारत में 31.16 प्रतिशत से भी अधिक आबादी शहरों व कस्बों में निवास करती है। सरकार द्वारा शहरी तथा ग्रामीण स्वच्छता मिशन, जल तथा स्वच्छता कार्यक्रम, स्वच्छ भारत मिशन योजनाओं के द्वारा देश की स्वच्छता व स्वास्थ्य की स्थिति को सुधारने का प्रयास किया जा रहा है।

सहस्राब्दि विकास लक्ष्य में भी स्वच्छता व स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दिया गया है। भारत द्वारा भी इस पर ध्यान केन्द्रित किया गया है और यह माना जा रहा है कि भारत 2025 तक स्वच्छता व स्वास्थ्य के क्षेत्र में सुदृढ़ रूप से सामने आएगा।

स्वच्छता हेतु किए जा रहे कार्य

भारत देश में स्वच्छता व स्वास्थ्य की स्थिति को सुधारने के लिए विभिन्न प्रकार की नयी तकनीकों का प्रयोग किया जा रहा है। सरकारी, निजी सहभागिता को बढ़ावा देते हुए सम्पूर्ण स्वच्छता व स्वास्थ्य में सुधार की कोशिश की जा रही है।

इस अभियान में आई0ई0सी0 (सूचना शिक्षा संचार) का अपना विशेष योगदान है। इसके माध्यम से व्यवहार में बदलाव द्वारा समुदायों को स्वच्छता व स्वास्थ्य के मुद्दों पर जागरूक करने का प्रयास किया जा रहा है। इस कार्य में ग्रामीण स्थानों में पंचायती राज संस्था, समुदाय आधारित संगठन तथा गैर सरकारी संगठन अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। विभिन्न प्रतियोगिताओं, गतिविधियों, जागरूकता कार्यक्रमों द्वारा लोगों संवेदित कर जागरूक किया जा रहा है। सरकार द्वारा इन हस्तक्षेपों के लिए व्यक्तिगत शौचालय, विद्यालय स्वच्छता, स्वच्छता शिक्षा, रूरल सेनेटरी मार्ट का प्रयोग हो रहा है। इसके साथ ही भारत सरकार द्वारा खुले में शौच को रोकने हेतु व्यक्तिगत व सामुदायिक शौचालय बनाने पर जोर दिया जा रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता को बढ़ावा देने हेतु निर्मल ग्राम पुरस्कार पंचायती राज संस्था को दिया जा रहा है ताकि गांव स्वच्छता के प्रति जागरूक हो।

इसके साथ ही विभिन्न विकाशील देशों में मूल्य प्रभावी हस्तक्षेप द्वारा स्वच्छता एवं स्वास्थ्य पर ध्यान दिया जा रहा है। इन समस्त हस्तक्षेपों द्वारा जलजनित रोग मलेरिया, डायरिया, टाइफाइड के स्तर में कमी देखने को मिल रही है। इन हस्तक्षेपों के माध्यम से पेयजल गुणवत्ता तथा जल स्रोतों को और भी प्रभावकारी बनाने तथा समुदाय को संवेदित किया जा रहा है। घर की स्वच्छता व समुदाय की स्वच्छता पर जोर देकर जन स्वास्थ्य को प्रोन्नत किया जा रहा है।

पेयजल गुणवत्ता को ध्यान में रखते हुए समुदाय सहभागिता पर जोर दिया जा रहा है जिससे वे जल बचाव के प्रति जागरूक हो सके क्योंकि जल की गुणवत्ता में सुधार नहीं होगा तब तक इससे उत्पन्न होने वाली बीमारियों को नियंत्रित नहीं किया जा सकता है अर्थात् हस्तक्षेप तभी सफल हो सकते है, जब तक सही मार्ग द्वारा कार्य का निष्पादन नहीं किया जाए।

स्वच्छ जल की कमी, खराब पर्यावरण स्वच्छता, मानव मल का सही निष्पादन न होना, खराब व्यक्तिगत स्वास्थ्य ने भारत में बीमारियों की स्थिति को गंभीर कर दिया है। इसके फलस्वरूप रोग नियंत्रण रणनीति सही कारगर साबित नहीं हो पा रही है।

समुदाय आधारित संगठन उपागम

किसी भी देश में निचले स्तर पर सुधार व जागरूकता संबंधित कार्य करने के लिए समुदाय आधारित संगठन सार्थक सिद्ध हुए है। विभिन्न गैर सरकारी संगठनों द्वारा समुदाय आधारित संगठन को संगठित विकसित व दृढ़ करने का कार्य किया जाता है जिससे महिलाओं की अहम् भूमिका पायी गयी है। विकसित क्षेत्रों में वंचित समुदायों का क्षमतावर्धन किया जाता है, जिससे वे स्थानीय दशा को सुधारने में अपनी भूमिका निभा सके। इसके माध्यम से समुदाय के व्यवहार, सामाजिक स्थिति में भी परिवर्तन हो देखा जा सकता है। वहीं स्वच्छता की कमी के कारण होने वाली बीमारियों से बच्चे, युवा व वृद्धजन घिरे हुए है। आज भी देश में स्वच्छता व स्वास्थ्य की स्थिति को सुधारने हेतु समुदाय आधारित संगठनों की आवश्यकता को समझकर इनके साथ योजनाबद्ध तरीकें से कार्य किया जा रहा है।

निष्कर्ष

भारत विश्व में जनसंख्या की दृष्टि से दूसरे स्थान पर है, जहां लगभग 31.2 प्रतिषत जनसंख्या शहरों व कस्बों में निवास कर रही है। औद्योगीकरण व निजीकरण के फलस्वरूप ग्रामीण जनता आजीविका हेतु शहरों की ओर पलायन कर रही है। यह अनियंत्रित पलायन स्वच्छता, स्वास्थ्य, सरकारी योजनाओं के लिए एक चुनौती के रूप में सामने खड़ी है। सरकार द्वारा भी इन क्षेत्रों में स्वच्छता व स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न योजनायें चलायी जा रही है, जिसके माध्यम से बीमारियों को नियंत्रित करने का प्रयास किया जा रहा है परन्तु इसके बाद भी विभिन्न चुनौतियां आज हमारे सामने एक समस्या बन कर खड़ी है, जो इनके सफल होने में रूकावट डाल रही है।

आज भी विकासषील देशों में स्वच्छता व स्वास्थ्य की समस्या अति ज्वलंत है। ये समस्यायें हमारे पर्यावरण पर अपना सीधा प्रभाव डाल रही है। जिसके कारण संक्रमित रोगों की संख्या बढ़ी है। इस स्थिति से निपटने हेतु गैर सरकारी संगठन, अंतर्राष्ट्रीय संगठन, सरकारी योजनायें व नीतियां अपना प्रभावी कार्य करने का प्रयास कर रही है। इसी के तहत विश्व स्वास्थ्य संगठन, वॉटर एड, यूनीसेफ जैसी संस्थायें भारत में स्वच्छता के स्तर को प्रबल बनाने में अपना सहयोग दे रही है, ताकि हमारी स्थिति पहले से बेहतर हो सके और एक स्वच्छ व स्वस्थ भारत का निर्माण संभव हो सके।